Caus. पादयामि, fortasse *πάλλω* e *πάδjω*, v. अन्य = *ἄλλος*; russ. *padaju* cado = Caus. पादयामि; hib. *faoidhim* «I go, depart, send», *faidh* «departure, going».

c. अनु *A. interdum P.* 1) sequi. MAH. 1.7962. 2) intrare. MAH. 3.239.: अन्वपद्यद् अन्तर्वेश्म; 3.12714.: वनम् एवा 'न्वपद्यत· — अक्षान् अनुपत्तुम् talos jacere, talis ludere. MAH. 2.2185.: तान् अक्षान् अन्वपद्यत; 3.1356.: अक्षान् अन्वपद्यम्·

c. अभि adire, accedere. MAH. 1.8130.: ऋत्विजो ना 'भ्यपद्यन्त; R. Schl. II. 63.16.: स्नाताः पादपान् अभिपेदिरे·

c. अभि praef. सम् accedere, venire. MAH. 3.12539.: प्रावृट् समभिपद्यत, *omisso augmento, ita* MAH. 1.5515.: द्रोणः समभिपद्यत et 3.10441.: युवनाश्वः ... समभिपद्यत·

c. आ 1) adire, aggredi. N. 21.5.: परम् विस्मयम् आपन्ना; BR. 1.34.: कृच्छ्रम् अहम् आपन्नः; MAH. 1.5305.: पञ्चत्वम् आपेदे; BHATT. 15.89.: एष रावणिर् आपादि वानराणाम् भयङ्करः· 2) in calamitatem incurrere, calamitate obrui, (v. आपद्, आपत्ति)· R. Schl. II. 53.13.: यः कामम् अनुवर्तते । एवम् आपद्यते क्षिप्रं राजा दशरथो यथा· आपन्न infelix. UR. 6.3. infr. — *Caus.* 1) adducere. MAH. 1.1832.; R. Schl. II. 54.5. 2) perdere, calamitatem alicui inferre. UR. 32.11.: बलाद् अपराधिनम् माम् आपादयसि·

c. आ praef. वि *Caus.* interficere. HIT. 24.12.: अनाहारेणा ''त्मानम् भवद्द्वारि व्यापादयिष्यामि; 111.21.

c. आ praef. सम् adire, aggredi. MAH. 1.6747.

c. आ praef. सम् + अभि *id.* R. Schl. II. 12.1.: चिन्तां समभ्यापेदे·

c. उत् oriri, nasci. RAM. I. 57.23.: कुक्षेर् विकुक्षिः उदपद्यत; MAN. 10.66.: अनार्यायां समुत्पन्नो ब्राह्मणात्; MAH. 3.379.: युद्धम् उत्पत्स्यते महत्; 2.2395.: अनयो भरतेषु 'दपादि· — *Caus.* producere, generare. BR. 1.30.: स्वयम् उत्पाद्य ताम् बालाम्; MAH. 3.8634.: उत्पादय मह्यम् अपत्यम्; R. Schl. I. 19.25.: तुष्टिम् उत्पादयाञ्चक्रुः पितुः· Profundere, *de sanguine.* MAN. 4.167.: उत्पाद्य ब्राह्मणस्या 'सृग् अङ्गतः·

c. उत् praef. सम् *id.* oriri, nasci. MAN. 10.66.; MAH. 3.15278.

c. उप 1) adire, aggredi. MAH. 3.3078.: अर्थास् तस्यो 'पपत्स्यन्ते; 3081.: उपपद्यस्व कौन्तेय; *c. dat.* BH. 13.18.: मद्भावायो 'पपद्यते· *Pass.* inveniri, *es gibt.* BH. 6.39.: त्वद् अन्यः संशयस्या 'स्य छेत्ता न ह्य् उपपद्यते (cf. गम् praef. अधि)· उपपन्न *act.* aggressus. H. 2.8.: उपपन्नश् चिरस्या 'द्य भक्तो ऽयम्; *pass.* praeditus. N. 1.1.: उपपन्नो गुणैर् इष्टैः· 2) accidere, evenire, fieri. MAH. 2.777.: यथा वदसि गोविन्द सर्वन् तद् उपपद्यते· 3) convenire, decere; *c. loc.* BH. 2.3.: नै 'तत् त्वय्य् उपपद्यते; MAH. 3.15179. — *Caus.* 1) afferre, apportare. MAH. 2.6271.: तद् अन्नम् उपपादयन्; RAGH. 14.8.: रक्षःकपीन्द्रैर् उपपादितानि ... जलानि· 2) dare. MAN. 3.96.: भिक्षाम् ... ब्राह्मणायो 'पपादयेत्; 9.72.; 11.76. *Cum acc. pers. et instr. rei.* MAH. 6724.: तम् अन्नेनो 'पपादय· 3) facere, perficere, peragere. RAGH. 11.91.: देवकार्यम् उपपादयिष्यतः· 4) colligere, concludere. N. 16.9.: तर्कयामास भैमी 'ति कारणैर् उपपादयन्·

c. उप praef. सम् accidere, evenire, fieri, perfici. MAH. 2.779.: क्षिप्रम् एव यथा त्व् एतत् कार्यं समुपपद्यते ... तथा कुरु·

c. निस् oriri, nasci. MAN. 9.247.: निष्पद्यन्ते शस्यानि यथो 'प्तानि; R. Schl. I. 6.23.: अञ्जनाद् अपि निष्पन्नैर् वमनाद् अपिच द्विजैः; HIT. 15.18.

c. प्र 1) ire, adire, proficisci. DR. 6.13.: यद्य् एव देवी ... दिवम् प्रपन्ना; N. 20.18.: शरणान् त्वाम् प्रपन्नो ऽस्मि; R. Schl. I. 8.17.: चिन्ताम् प्रपत्स्यते· 2) se inclinare. IN. 4.14.: तव पादाव् अद्य प्रपद्यताम्; 5.47.: मूर्ध्ना प्रपन्नो ऽस्मि पादौ ते; MAH. 1.8217.: पुनर् अग्नौ प्रपेदिरे· — प्रपन्न inclinatus, pronus, propensus, propitius. A. 4.14.: प्रपन्नस् त्वान् धनञ्जयः·

c. प्र praep. अनु sequi. SA. 5.24. BH. 9.21.

c. प्रति 1) adire, aggredi, pervenire. H. 1.4.: वनं राजन् गहनम् प्रतिपेदिरे; IN. 2.11.: प्रतिपेदे ... नक्षत्रमार्गम्; R. Schl. I. 23.7.: स्वधर्मम् प्रतिपद्यस्व· 2) nancisci,